रसिया, बिहागड़े में प्यारी पग, केदार की विलम्बित बंदिश सीखे हो छल-बल आदि। ये सभी बल्लभ सम्प्रदाय पुष्टिमार्गीय के पद हैं। उस्ताद फैयाज खां साहब ने वल्लभ सम्प्रदाय की भज वन्दे नंद कुमारम् जैसी रचना का गायन किया तो उस्ताद अमीर खां साहब ने चारुकेशी में लाज रखो तुम मोरी गोसैयां जैसी बंदिश की रचना की। पं. मल्लिकार्जुन मंसूर जैसे कई वरिष्ठ गायक प्यारी पग हौले बंदिश को खूब गाते थे, कई लोग आज भी इसे गा रहे हैं। जयपुर-अतरौली घराने के उस्ताद अल्लादिया खां ब्रज में भी आये और नाथद्वारा में भी जहां से उन्होंने कई रचनाएं प्राप्त कीं। तात्पर्य यह कि जाति, धर्म और घरानों की दीवारें तोड़कर अनेक श्रेष्ठ कलाकारों ने हमारी परंपरा के पदों को अपनाया और गाया।

आप और उस्ताद अमीर खां दोनों इंदौर में रहते थे। आपको 'आधुनिक युग का अमीर खां' भी कहा जाता है। अपने और उनके जुड़ाव के विषय में कुछ बताएं?

सर्वप्रथम तो मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि मैं तो उस्ताद अमीर खां साहब की गायकी से प्रभावित हूं ही, किन्तु यह स्वयं भी वल्लभ सम्प्रदाय के संगीत से अत्यधिक प्रभावित थे। बाल्यावस्था से ही वह वल्लभ सम्प्रदाय के मंदिरों, संगीत सभाओं में आते रहते थे। लोगों का गाना-बजाना सुनते थे। अगर कोई ज्ञान चक्षु खोलकर देखे तो उनके गायन पर वल्लभ सम्प्रदाय के प्रभाव को सहज ही देखा जा सकता है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि खां साहब की जिन मेरुखंड की तानों के लिये आज भी प्रशंसा होती है, वह उन्हें यहीं से मिली थी। वल्लभ परंपरा की एक पुस्तक में मेरुखंड की तानों का विधिवत् और सोदाहरण विवरण दिया हुआ है, जिसे खां साहब ने अपने एक मित्र रामनाथ शैल श्रीवास्तव के साथ मिलकर 'हस्तगत' कर लिया। घर जाकर खां साहब ने अपने मित्र रामनाथ शैल के साथ मिलकर उसकी प्रतिलिपि तैयार की, और फिर कुछ समय बाद चुपके से उस पुस्तक को वहीं रख दिया। इस घटना के विषय में उस्ताद बाबू खां वीणा वादक जो स्वयं वल्लभ सम्प्रदाय के इंदौर स्थित मंदिर में कार्यरत थे, के कुछ शिष्यों ने भी मुझे बताया और इस कार्य में खां साहब के सहयोगी रहे उनके मित्र रामनाथ शैल श्रीवास्तव ने भी। इनमें से कुछ तानों की साधना करके खां साहब ने किन ऊंचाइयों का स्पर्श किया वह सर्वविदित है।

अमीर खां साहब को वल्लभ सम्प्रदाय के कई पद काफी पसंद थे। जैसे 'शुद्ध बसंत का उड़त बंदन नवल नील भये।' इसे खां साहब गाते थे। बाद में बड़े होने पर उन्होंने बल्लभाचार्य महाप्रभु के पुत्र गोसाईं जी पर एक खयाल की रचना की चारुकेशी राग में- ''लाज रखो तुम मोरी गोसैंया। ध्यान धरूं औ लागूं पैंया। लाज रखो तुम मोरी गोसैंया। तुम्हरी माया के ढंग न्यारे। दुखियन के इक तुम ही सहारे।'सुररंग' तुम पर बलि-बलि जैंया।' हमारे सम्प्रदाय के ही शिष्य किशनगढ़ और नाथद्वारा के मंदिरों में भी वह गये थे। इसके बाद वह मुंबई गये और बड़े मंदिर के मुकुन्द गोस्वामी के सम्पर्क में आये। चूंकि मुकुन्द गोस्वामी इनके शिष्य बन गये अत: पुष्टिमार्गीय वल्लभ सम्प्रदाय की अनेक रचनाएं गोस्वामी के माध्यम से खां साहब को मिलीं। उस्ताद अमीर खां बहुत ही सज्जन व्यक्ति थे। उन्होंने कभी किसी की निंदा नहीं की और जहां से जो कुछ लिया उसे उसका श्रेय दिया। स्पष्ट रूप से वह बताते थे कि यह रचना उन्हें कहां से मिली है। जैसे मेरे पूर्वज हरिराय जी महाप्रभु की एक बंदिश वह झपताल और तीनताल में अक्सर गाते थे जो सादरा है- 'ओ मेरी आली।' इसे रेडियो के उर्दू सर्विस वाले अभी भी कभी-कभी बजाते हैं। इसी प्रकार दरबारी की ही 'मेरी पलकन सो मग झारूं' को भी वह खूब गाते थे। जो मेरी ही सम्प्रदाय का भक्ति पद है।

हमरी परंपरा का ही केदार में एक पद है 'सुघड़ चतुर बैंया तुम पकड़त हो बलमा' इसमें एक शब्द लाडली आता है जिसका तात्पर्य राधिका से है। इसी तरह बिहाग का एक छोटा खयाल है-'आली अलबेली सुंदर नार' यह भी राधा से संबंधित परमानंद दास की रचना है, जो बल्लभ सम्प्रदाय के शिष्य थे। बल्लभ सम्प्रदाय एवं हवेली संगीत का आचार्य होने के नाते मैं कह सकता हूं कि हवेली संगीत पुष्टिमार्गीय अष्ट छाप संगीत है, भक्ति संगीत है, जिसके अनेक पद वर्तमान में ख्याल के रूप में गायकों द्वारा गाये जा रहे